संकलित परीक्षा - I, 2012

HB1-027

हिन्दी 'ब'

कक्षा - IX

निर्धारित समय : 3 घण्टे **अधिकतम अंक : 90**

निर्देश :

(1) इस प्रश्न-पत्र के **चार खंड** हैं - **क, ख, ग** और **घ।**

(2) चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना **अनिवार्य** है।

(3) यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमश: दीजिए।

खण्ड - क

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तरों में से सही उत्तर वाले विकल्प छाँटकर लिखिए - 1x5=5

अनुशासन किसी वर्ग या आयु-विशेष के लिए ही नहीं, अपितु सभी के लिए ही परमावश्यक होता है। जिस जाति, देश और राष्ट्र में अनुशासन का अभाव होता है, वह अधिक समय तक अपना अस्तित्व नहीं बनाए रख सकता है। जो विद्यार्थी अपनी दिनचर्या निश्चित अवस्था में नहीं ढाल पाता, वह निरर्थक है क्योंकि विद्या ग्रहण करने में व्यवस्था ही सर्वोपरि है। अनुशासन का पालन करते हुए जो विद्यार्थी योगी की तरह विद्याध्ययन में जुट जाता है, वही सफलता पाता है। अनुशासन के अभाव में विद्यार्थी का जीवन शून्य बन जाता है। कुछ व्यवधानों के कारण विद्यार्थी अनुशासित नहीं रह पाता और अपना जीवन नष्ट कर लेता है। सर्वप्रथम बाधा है उसव मन की चंचलता। उसे अनुभव नहीं होता है, इसलिए गुरुजनों की आज्ञाएँ तथा विद्यालयों के नियम, अभिभावकों की सलाह उसे कारागार के समान प्रतीत होते हैं। वह उनसे मुक्ति का मार्ग तलाशता रहता है। कर्त्तव्यों को तिलांजलि देकर केवल अधिकारों की माँग करता है। हर प्रकार से केवल अपनी आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए संघर्ष पर उतारू हो जाता है और यहीं से उच्छृंखलता और अनुशासन हीनता का जन्म होता है।

(i) अनुशासन के अभाव में -

(क) स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता। (ख) समय-सारणी नहीं बनती।

(ग) किसी का अस्तित्त्व नहीं रहता। (घ) धन नहीं कमा पाता।

(ii) पढ़ाई के लिए सर्वाधिक आवश्यकता है -

(क) पुस्तकों की (ख) सलाहकारों की

(ग) अच्छी व्यवस्था की (घ) स्वाध्याय की

(iii) शून्य का क्या अर्थ है ?

(क) असफल (ख) सफल (ग) मृत्यु (घ) व्यर्थ

(iv) विद्यार्थी की अनुशासनहीनता का प्रमुख कारण है -

(क) कर्त्तव्यों को तिलांजलि (ख) अव्यवस्था

(ग) मन की चंचलता (घ) अधिकारों की माँग

(v) 'कारागार के समान प्रतीत होती है' वाक्य में कारागार का अर्थ है -

(क) अतिथि कक्ष (ख) महल (ग) जेल (घ) प्रतीक्षालय

H-12-1

2. **निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तरों में से सही उत्तर वाले विकल्प छाँटकर लिखिए -** 1x5=5

पूस की अँधेरी रात ! आकाश पर तारे ठिठुरते हुए मालूम होते थे। हल्कू अपने खेत के किनारे ऊख के पत्तों की एक छतरी के नीचे बाँस के खटोले पर अपनी पुरानी गाढे की चादर ओढे काँप रहा था। खाट के नीचे उसका संगी कुत्ता जबरा पेट में मुँह डाले सरदी से कूँ-कूँ कर रहा था। दो में से एक को भी नींद न आती थी। हल्कू ने घुटनियों को गरदन में चिपकाते हुए कहा, ''क्यों जबरा, जाड़ा लगता है ? कहता तो था, घर में पुआल पर लेट रह, तो यहाँ क्या लेने आए थे। अब खाओ ठंड, मैं क्या करूँ ! जानते थे, यहाँ हलुवा-पूरी खाने आ रहा हूँ, दौड़े-दौड़े आगे-आगे चले आए। अब रोओ नानी के नाम को।'' हल्कू ने हाथ निकालकर जबरा की ठंडी पीठ सहलाते हुए कहा, ''कल से मत आना मेरे साथ, नहीं तो ठंडे हो जाओगे। यह पछुआ न जाने कहाँ से बरफ लिए आ रही है। उठूं, फिर एक चिलम भरूँ। किसी तरह रात तो कटें। आठ चिलम तो पी चुका। यह खेती का मज़ा है और एक-एक भागवान ऐसे पड़े हैं, जिनके पास जाड़ा जाए तो गरमी से घबराकर भागे। मोटे-मोटे गद्दे, लिहाफ-कम्बल। मजाल है कि जाड़े का गुज़र हो जाए। तकदीर की खूबी है। मजूरी हम करें, मज़ा दूसरे लूटें।''

(i) पूस के माह में ऋतु होती है -
(क) बसंत (ख) शीत (ग) वर्षा (घ) हेमंत

(ii) अनुच्छेद की पहली दो पंक्तियाँ बता रही है कि 'हल्कू' बहुत ही -
(क) हट्टा-कट्टा है। (ख) गरीब है। (ग) संपन्न है। (घ) जवान है।

(iii) ''मजूरी हम करें, मजा दूसरे लूटें'' रेखांकित वाक्यांश किसके लिए कहा गया है ?
(क) ऐश आराम करने वालों के लिए। (ख) धनी व्यक्तियों के लिए।
(ग) सुखी जीवन जीने वालों के लिए। (घ) ईमानदारी से जीने वालों के लिए।

(iv) 'ठंडे हो जाओगे' का अर्थ है -
(क) ठंड लगना (ख) काँपना (ग) ठिठुरना (घ) मर जाना

(v) 'एक एक भागवान ऐसे पड़े हैं' में 'भागवान' का अर्थ है -
(क) धनाढ्य (ख) शक्तिशाली (ग) सरपंच (घ) नेता लोग

3. **निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तरों में से सही उत्तर वाले विकल्प छाँटकर लिखिए -** 1x5=5

रेशमी कलम से भाग्य-लेख लिखने वालो,
तुम भी अभाव से कभी ग्रस्त हो रोए हो ?
बीमार किसी बच्चे की दवा जुटाने में,
तुम भी क्या घरभर पेट बाँधकर सोए हो ?
असहाय किसानों की किस्मत को खेतों में,
क्या अनायास जल में बह जाते देखा है ?
क्या खाएँगे ? यह सोच निराशा से पागल,
बेचारों को चीख रह जाते देखा है ?
देखा है ग्रामों की अनेक रंभाओं को,
जिनकी आभा पर धूल अभी तक छाई है ?
रेशमी देह पर जिन अभागिनों की अब तक,
रेशम क्या ? साड़ी सही नहीं चढ़ पाई है।
पर, तुम नगरों के लाल,